Class - V
Subject - HINDI
पाठ – 2 पश्चाताप के आँसू

1. शब्दार्थ :–

बाजूबंद	–	बाँह में पहनने का आभूषण
संकल्प	–	प्रण
स्वीकारोक्ति	–	स्वीकार करना
भविष्य	–	आने वाला समय
पायताने	–	पैर की तरफ़
कलुष	–	मैल, पाप
अनुभूति	–	महसूस करना
कबूल	–	स्वीकार
पाप–बोध	–	बुरे कर्म से उत्पन्न ग्लानि
जोखिम	–	ख़तरा
क्षमा–याचना	–	माफी माँगना
अस्वस्थ	–	बीमार
स्मृति	–	याद
मुक्ति	–	छुटकारा
स्पष्ट	–	साफ़
आश्वस्त	–	निश्चिंत

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर बताइए।

क. बारह–तेरह साल की उम्र में गांधी जी से क्या अपराध हो गया था?

उत्तर बारह–तेरह साल की उम्र में गांधी जी से अपने नौकर के जेब–खर्च में से कुछ पैसे चुराने का अपराध हो गया था।

ख. भाई के साथ मिलकर किए गए पाप का गांधी जी पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर भाई के साथ मिलकर किए गए पाप से गांधी जी पर पाप–बोध का भार चढ़ गया।

ग. गांधी जी ने क्या संकल्प लिया?

उत्तर गांधी जी ने संकल्प लिया कि वे भविष्य में कभी चोरी नहीं करेंगे।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

क. पंद्रह वर्ष की आयु में गांधी जी व उनके भाई ने क्या पाप किया?

उत्तर पंद्रह वर्ष की आयु में गांधी जी व उनके भाई ने चुपके से बाजूबंद की ताबीज में से सोना काटकर उसे बेचकर कर्ज के पच्चीस रूपए चुकाए थे। उनसे यही पाप हुआ था।

ख. गांधी जी में पिता जी को अपना अपराध बताने की हिम्मत क्यों नहीं थी?

उत्तर गांधी जी में पिताजी को अपराध बताने की हिम्मत नहीं थी क्योंकि पिताजी को चोरी करने की बात से तकलीफ होती।

ग. गांधी जी ने किस तरह अपना पाप स्वीकार किया?

उत्तर गांधी जी ने अपना अपराध क्षमा–याचना के साथ एक पत्र में लिखकर पिताजी को दिया। इस प्रकार उन्होंने अपना पाप स्वीकार किया।

घ. गांधी जी की स्वीकारोक्ति से उनके पिता जी पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर गांधी जी की स्वीकारोक्ति से उनके पिता जी काफी रोने लगे परन्तु नाराज नहीं हुए वरन बिल्कुल शान्त हो गए। उनका हृदय प्रेम से भर उठा।

ङ प्रस्तुत पाठ का नाम 'पश्चाताप के आँसू' क्यों पड़ा? पाठ का कोई अन्य शीर्षक सुझाइए व उसका कारण भी बताइए।

उत्तर प्रस्तुत पाठ का नाम 'पश्चाताप के आँसू' पड़ा क्योंकि गांधी जी ने अपना अपराध सच्चे हृदय से पछतावे की भावना से स्वीकार किया। सच्चे पश्चाताप ने उनके पिता जी को रोने पर विवश कर दिया था।

पाठ का अन्य शीर्षक है – 'अपराध–बोध' क्योंकि गांधी जी अपराध बोध से ग्रस्त थे।

4. मूल्यपरक प्रश्न

प्रश्न 'स्पष्ट स्वीकारोक्ति के बिना पाप–बोध से छुटकारा नहीं था।' लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

उत्तर गांधी जी ने जब तक अपने पाप को अपने पिताजी के सामने स्वीकार नहीं किया था तब तक उनके मन में पाप–बोध का भार चढ़ा हुआ था। इससे छुटकारा पाने के लिए उन्होंने अपना पाप स्वीकार कर लिया। इसलिए लेखक ने कहा कि 'स्पष्ट स्वीकारोक्ति के बिना पाप–बोध से छुटकारा नहीं था।